International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

प्रणामी सम्प्रदाय में स्वामी लालदास का योगदान

(बीतक के विशेष संदर्भ में)

शोधार्थी - प्यारेलाल अहिरवार,
महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय छतरपुर (म. प्र)

शोध निर्देशक - डॉ. राशिद खान
सहायक प्राध्यापक इतिहास, शासकीय महाविद्यालय लिधौरा(म.प्र)

सारांश - 17वीं शताब्दी में महामति प्राणनाथ ने प्रणामी संप्रदाय की स्थापना की जिसने सत्तधर्म और एकेश्वरवाद के सिद्धांत को जन-जन तक पहुँचाया। इस सम्प्रदाय के प्रसार और प्रचार में उनके शिष्य स्वामी लालदास की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। स्वामी लाल दास ने बीतक नामक ग्रंथ की रचना की जो ना केवल प्राणनाथ जी के जीवन चरित्र और उपदेशों का संकलन है ,बल्कि प्रणामी संप्रदाय की दार्शनिक एवं ऐतिहासिक धरोहर भी है। स्वामी लालदास कृत बीतक का सम्बन्ध श्री देवचन्द्र जी तथा श्री प्राणनाथ जी के जीवन एवं उनके द्वारा अवतरित तारतम वाणी से हैं। भारतीय इतिहास के मध्य युग में महामति प्राणनाथ ने हिन्दू मुसलमानों के पारस्परिक धार्मिक दुर्भावना को शान्त करने का सन्देश ही नहीं दिया बल्कि हिंदुओं के धर्म ग्रन्थ वेद ,उपनिषद ,गीता, भागवत तथा मुसलमानों के धर्म ग्रन्थ कुरान, ईसाइयों के इंजील, यहूदियों के जबूर तथा दाउद पैगम्बर के अनुयायियों के धर्म ग्रन्थ तौरेत में मौलिक एकता खोजने का प्रयत्न किया। प्रस्तुत शोध-पत्र में बीतक के विशेष संदर्भ में स्वामी लाल दास के योगदान का विश्लेषण किया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने प्रणामी संप्रदाय की शिक्षाओं को जनसामान्य तक पहुँचने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

संकेत शब्द - प्रणामी संप्रदाय, स्वामी लाल दास, बीतक, सामाजिक समरसता, दार्शनिक विचार, मध्यकालीन भारत

▪ प्रस्तावना -

'बीतक' शब्द वृत्त या जीवन वृत्तांत के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।मध्यकालीन भारतीय इतिहास में 'प्रणामी संप्रदाय' ने हिंदू-मुस्लिम एकता और निर्गुण-सगुण समन्वय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वामी लाल दास इस संप्रदाय के आधार स्तंभ माने जाते हैं। उनकी रचना 'बीतक' केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि तत्कालीन भारत का एक सांस्कृतिक दस्तावेज है। ब्रहामुनि शिरोमणि स्वामीलालदास जी ने निजानंद धर्म दर्शन का क्रमिक प्रमाणिक इतिहास बीतक में संजोया है। आपकी कृतियां गद्य और पद दोनों में उपलब्ध है। भाषा शैली बोधगम्य है, स्पष्ट तथा अतिशयोक्तियों से रहित है। स्वामी लालदास के बीतक के अतिरिक्त बड़ी वृत्त,छोटी वृत्त (परमधाम वर्णन) बड़ा मसौदा, माजजा आदि महत्वपूर्ण कृत्रियाँ है। लगभग इन सब में महामति की ही छाप हैं। ऐतिहासिक परंपरा का निर्वाह करते हुए स्वामी लालदास जी ने चारों युगों के राजाओं के नाम उल्लेख पश्चात इस बात पर विशेष बल दिया है कि कलयुग के अंतिम चरण में पुनः चंद्रवंशी एवं सूर्यवंशी कुल में ब्रह्म मुनियों में भी श्रेष्ठ अग्रणी आत्माओं का एलएलएमअवतरण होगा और उनके द्वारा तारतम विस्तार से सतयुग का प्रारंभ होगा।

सतयुग के बीजभूत, इन्हों बीच रहे विस्तार।

होवे सब में जाहिर, अखंड ए संसार।।

विभिन्न पुराणों की भविष्यवाणियों को सत्य सिद्ध करते हुए श्री देवचंद एवं मेहराज ठाकुर में ब्रह्म आत्माओं का प्रकटीकारण हुआ।[1]

▪ श्री देवचंद्र जी का जीवन चरित्र -

सतगुरु श्री देवचंद जी का जन्म 11 अक्टूबर 1581 तदनुसार विक्रम संवत 1638 के आशिवन शुक्ल चतुर्दशी को कायस्थ कुल में सिंध प्रांत की अमरकोट गांव में हुआ था। आपके पिता श्रीमतू मेहता तथा कुंवर बाई थी।[2] आपके गुरु श्री हरिदास जी थे जिन्होंने भजमन श्री वृंदावन कुंज बिहारी नित्य विलास गुरु मंत्र दिया। चौदह वर्ष तक श्रीमद् भागवत श्री कान्हा भट्ट जी से श्रवण की, भगवान श्री कृष्ण ने स्वयं साक्षात दर्शन देकर तारतम में मंत्र प्रदान किया जिसे धारण कर वे निज (आत्मा) में आनंद से परिपूर्ण होकर निजानंद कहलाये।[3]

निजानंद स्वामी श्री देवचंद जी

संवत् 1678 में आपने निजानंद संप्रदाय की स्थापना की जो कालांतर में प्रणामी धर्म के रूप विख्यात हुआ। कहां गया है कि देवचंद जी सब देवन के देव और संपूर्ण इष्टों के इष्ट है। आज भी प्रणामी परंपरा में श्री देवचंद्र जी कि निजानंद पद्धति सभी के लिये प्रेरणा स्रोत है। आपका विक्रम संवत 1712 भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी बुधवार को धाममन हुआ।[4]

▪ महामति प्राणनाथ जी का जीवन-

श्री प्राणनाथ जी का जन्म हल्लार देश जामनगर या नौतन पुरी में विक्रम संवत 1675 भाद्रपद ,कृष्ण पक्ष दिन रविवार को सन् 1618 ई. को चढ़ते प्रहर हुआ था। इनके पिता का नाम श्री केशव ठाकुर तथा माता का नाम धन बाई था। आपका बचपन का नाम श्री मेहराज या मिहिराज था। स्वामी लाल दास के बीतक के आधार पर आपकी धर्मपत्नी फुल बाई व तेज बाई थी।[5] उनके तीन बड़े श्यामल ,गोवर्धन ,हरवंश और एक छोटे भाई उद्धव भी थे। मेहराज ठाकुर का बचपन बड़े ही आराम और लाड़ -प्यार से बीता। उनके पिता ने अन्य भाइयों के साथ उन्हें सुख - सुविधाओं में पाला था लेकिन 12 वर्ष की उम्र में गोवर्धन के साथ सतगुरु देव चंद्र जी से मिलन की बाद न केवल उनके जीवन में परिवर्तन हुआ बल्कि सतगुरु देवचंद को भी ऐसा प्रतीत हुआ कि उन्हें योग शिष्य की प्राप्ति हुई। जिसे सद्गुरु ने तारतम मंत्र की दीक्षा दी।[6] मेहराज ठाकुर का मन सांसारिक सुख तथा संपदा में नहीं लगता था। इसी बीच उनके बड़े भाई गोवर्धन की मृत्यु ने उन्हें अवसाद ग्रस्त कर रखा था। हालांकि वह अपनी योग्यता एवं कार्यकुशलता के कारण हमेशा अपने गुरु के विश्वासपात्र स्नेही थे।[7]

निष्कलंक बुधावतार महामति प्राणनाथ जी

प्रणामी संप्रदाय में मेहराज ठाकुर को महामति, इंद्रावती, इमाम मेहंदी,हक, बुद्ध निष्कलंक अवतार, हादी, आखरी महमद एवं प्राणनाथ की उपाधियों से भी सम्मानित किया गया है। मेहराज का सर्वाधिक मान्य एवं श्रद्धेय नाम महामति प्राणनाथ है। विक्रम संवत 1687 मार्ग शीर्ष शुक्ल 9 को (12 वर्ष 2 माह 10 दिन की आयु में) नौतन पुरी जामनगर में आपने सर्वप्रथम श्री देवचंद्र जी का दर्शन किया। अपनी पर्णकुटी में श्री मेहराज को श्री देवचंद जी ने तारतम मंत्र की दीक्षा दी। महामति प्राणनाथ 24 वर्ष 10 माह 5 दिन सतगुरु देवचंद जी के सानिध्य में रहे। परम ब्रह्म श्री कृष्ण ने तारतम मंत्र श्री देवचंद जी को विक्रम संवत 1678 ई. सन् 1621 में साक्षात् दर्शन देकर किया जिसे देवचंद जी ने महामति प्राणनाथ जी की आत्मा में प्रतिष्ठित कर 22 दिन में धार्मिक ज्ञान देकर उत्तराधिकारी घोषित किया।[8]

- **स्वामी लाल दास जी का जीवन -**

ब्रह्ममुनि स्वामी लालदास जी का जन्म सौराष्ट्र प्रांत के पोरबंदर में हुआ। उनके बचपन का नाम लक्ष्मण था। आप प्रणामी संप्रदाय में स्वामी लाल दास के नाम से प्रसिद्ध हुए। पोरबंदर में महात्मा तथा कस्तूरबा के घर जिसे आजकल पोरबंदर कीर्ति भवन कहते हैं। वहां से मिला हुआ प्रणामी मंदिर है। कहा जाता है कि यह मंदिर ही लाल दास जी का पुराना घर है। ठठ्टानगर में लालदास जी का वृहत व्यापार था। आपके पास निन्यानवे व्यापार पोत थे। व्यापारियों में आप लक्ष्मण सेठ के नाम से प्रख्यात थे। धर्म प्रिय होने के कारण गीता भागवत आदि शास्त्रों में विशेष रूचि थी। धर्म प्रचार करते हुए जिस समय श्री महामति प्राणनाथ जी ठठ्टानगर आये उस समय चतुरदास नामक एक द्विज के द्वारा लाल दास (लक्ष्मण सेठ) ने श्री महामति प्रार्थना जी के दर्शन किये।[9] वहीं से श्री प्राणनाथ द्वारा तारतम मंत्र की दीक्षा लेकर लाल दास पोरबंदर में धर्म प्रचार करने लगे। संवत 1729 सूरत नगर मंगलपुरी में श्री प्राणनाथ जी ने अपने सुंदरसाथ सहित भारत में धर्म प्रचार करने का निश्चय किया। लाल दास भी उनके साथ चले -

लालदास संग चले, खाली लेकर हाथ।

निवाहें आखर लों, चले राज के साथ।।

अब से लेकर श्री प्राणनाथ के परमधाम गमन तक लाल दास छाया की तरह उनके साथ रहे और सब प्रकाश से उनके दाहिने हाथ बने रहे। श्री प्राणनाथ के सहस्रसमासिक शिष्यों में लालदास ही अन्यतम शिष्य, निकटतम साथी तथा सर्वाधिक विश्वासपात्र थे। महामति जी लघु से लघु और महान से महान

बातों में उनकी सहमति लेते थे। स्वामी लाल दास जी सिंधी, गुजराती,कच्छी, मारवाड़ी, हिंदी (खड़ी ब्रिज), संस्कृत ,फारसी और अरबी कई भाषाओं के जानकार थे। महामति प्राणनाथ जी से दीक्षित होने के पहले भी आप गीता भागवत के संबंध में प्रवचन करते थे। श्री प्राणनाथ जी के लिए यहां कुरान का पाठ करते थे -

"कुरान हदीसां बांचने, बैठत है दासलाल"

स्वामी लाल दास के नाम से प्रणामी संप्रदाय में प्रमुख रचनाएं प्रसिद्ध है। बीतक, बड़ी वृत्त, छोटी वृत्त (खड़ी बोली पद्य), मोहम्मद साहब की बीतक या माजजा , बड़ा मसौदा, श्रीमद् भागवत अनुवाद, लगभग 1000 छंद इन समस्त ग्रन्थों में बीतक ही प्रणामी संप्रदाय में सर्वाधिक मान्य और महत्वपूर्ण है। प्रणामी संप्रदाय में जिस प्रकार श्री प्राणनाथ जी के बाद लाल दास जी का स्थान है। उसी प्रकार प्रणामी साहित्य में उपास्य ग्रंथ कुलजामस्वरूप के बाद लाल दास कृत बीतक का स्थान है।[10]

ब्रह्ममुनि स्वामी लाल दास जी

कुलजमस्वरूप जिसमें महाप्रभु प्राणनाथ जी की वाणी संकलित हैं। स्वामी लाल दास जी ने इस वाणी को न केवल सुना बल्कि उसे व्यवस्थित रूप से लिपिबद्ध करने में मुख्य भूमिका निभाई। बीतक के माध्यम से उन्होंने यह स्पष्ट किया कि यह वाणी कब कहां और किन परिस्थितियों में हुई। साथ उन्होंने बीतक के माध्यम से तारतम ज्ञान की व्याख्या की उन्होंने हिंदू वेदों और कुरान इस्लाम के बीच के वैचारिक मतभेद को दूर कर एक अद्वैत मार्ग प्रशस्त किया।[11]

- **निष्कर्ष-**

बीतक में उन्होंने दिखाया कि कैसे महाप्रभु प्राणनाथ जी ने एक ईश्वर अक्षरातीत परब्रह्म की अवधारणा दी बीतक में स्वामी लालदास जी ने तत्कालीन मुगल शासक जैसें औरंगजेब के साथ महाप्रभु के संवादों और संघर्षों का सजीव वर्णन किया है। उन्होंने छत्रसाल बुंदेला और महाप्रभु प्राणनाथ जी के मिलन का ऐतिहासिक वृतांत लिखा जिसने बुंदेलखंड के इतिहास को बदल दिया।

स्वामी लाल दास जी के बिना प्रणामी संप्रदाय का इतिहास अधूरा होता। उन्होंने बीतक लिखकर न केवल अपने गुरु की महिमा को अमर किया, बल्कि आने वाली पीढियां के लिए आध्यात्मिक ज्ञान का एक अक्षम कोष बीतक साहिब के रूप में सुरक्षित कर दिया।

- **संदर्भ ग्रंथ-**

1. महामति प्राणनाथ प्रेरित स्वामी लाल दास विरचित,बीतक, श्री प्राणनाथ मिशन, नई दिल्ली, 2000,पृ.21
2. डॉ भगवान दास गुप्त, बुंदेलखंड केसरी महाराजा छत्रसाल बुंदेला, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल, 1992 पृ.85
3. वहीं पृ.86
4. डॉ जयप्रकाश शाक्य, प्रणामी संप्रदाय और जागनी दर्शन, श्री प्राणनाथ मिशन, दिल्ली, 2024, पृ.51
5. महामति प्राणनाथ प्रेरित स्वामी लाल दास विरचित,बीतक, श्री प्राणनाथ मिशन, नई दिल्ली, 2000,पृ.6
6. डॉ रणजीत साहा, स्वर्ण जयंती विशेषांक जागनी, विश्व धर्म सद् भाव को समर्पित शोध -पत्रिका, श्री प्राणनाथ मिशन दिल्ली, 2024-25,पृ.63
7. वहीं पृ.64
8. डॉ जयप्रकाश शाक्य, प्रणामी संप्रदाय और जागनी दर्शन, श्री प्राणनाथ मिशन, दिल्ली, 2024, पृ.52
9. महामति प्राणनाथ प्रेरित स्वामी लाल दास विरचित, बीतक, श्री प्राणनाथ मिशन नई दिल्ली,2000,पृ.2
10. वहीं पृ.3
11. बी .के .श्रीवास्तव, बुंदेलखंड की संस्कृति, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2009,पृ.53
12. महात्मा सुशांत, श्रीलालदासजी कृत श्री बीतक साहिब (टीका सहित), श्री प्राणनाथ मिशन वैश्विक चेतना अभियान श्री निजानंद आश्रम बडोदरा एवं शामला जी,श्री निजानंद फाउंडेशन,यू.एस.ए.पृ.134